International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 2 January – February - 2026

21 वी सदी के हिंदी काव्य में चित्रित नारी संवेदना

प्रा. मारुती दत्तात्रय नायकू

सहयोगी प्राध्यापक (हिंदी)

कर्मवीर भाऊराव पाटील महाविद्यालय, पंढरपुर (स्वायत्त) जिला- सोलापुर (महाराष्ट्र) – 413304

Corresponding Author – प्रा. मारुती दत्तात्रय नायकू

DOI - 10.5281/zenodo.18654549

प्रस्तावना:

इक्कीसवीं सदी विभिन्न विमर्शों का कालखंड हैं । इसमें नारी विमर्श, दलित विमर्श, किसान विमर्श, वृद्ध विमर्श, बाल विमर्श, थर्ड जेंडर विमर्श आदि विमर्शों ने अपनी-अपनी वेदना तथा पीड़ा समाज के सामने रखने का प्रयास किया हैं । इन विमर्शो में नारी की संवेदना प्राचीन काल से लेकर आज तक चली आयी संवेदना हैं । 21 वी सदीं एक नये युग की चेतना लेकर आयी है, परन्तु नारी वर्तमान में भी उसी पुरानी पीड़ा के तले दबी हुई है । नारी जीवन के हर क्षेत्र में आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक शोषण का शिकार होती आयी है, परन्तु इन सबके साथ स्त्री पारिवारिक शोषण का भी शिकार होती है । नारी उत्पीड़न चाहे घर में हो या बाहर हर स्त्री-पुरूष उसे गुप्त रखता है । यही कारण है कि नारी को अधिक उत्पीड़न और शोषण का शिकार होना पड़ता है । नारी समाज द्वारा दी गई चुनौतियों का सामना तो कर सकती है, लेकिन पारिवारिक शोषण से निजात का कोई रास्ता नही दिखता । क्योंकि अपनों के साथ ही वह जीवन के कुछ पल जीती है । बाहर तो उसे दुःख, दर्द, पीड़ाओं, शोषण आदि से संघर्ष करना ही पड़ता है । घर के अंदर ही जब स्थितियाँ विपरीत हो या परिवार में ही शोषण की भावना निहित हो तो नारी कहाँ जाए? तब तो नारी की स्थिति उस पिंजरे में कैद पक्षी की तरह ही हो जाएगी वह मुक्त होने के लिए फड़फडाने के सिवा और कोई चारा नहीं होता । भारतीय संविधान ने सभी को स्वतंत्र अभिव्यक्ति और रहने का अधिकार दिया हैं, फिर भी नारी को बंधनों में रखना संविधान के खिलाफ है । अतः इसी को लेकर नारी विमर्श ने जन्म लिया और इस सदी में नारी की संवेदना विभिन्न रचनाकारों ने अपनी लेखनी द्वारा व्यक्त करने की कोशिश की ।

बीज शब्द: इक्कीसवीं सदी, नारी विमर्श, स्त्री संवेदना, वेदना, पीड़ा, घूँटन, संघर्ष, व्यथा, समाज, अन्याय-अत्याचार, परिवर्तन, आशा, अपेक्षा आदि ।

21 वी सदी के हिंदी काव्य में नारी संवेदना व्यक्त करने वाले रचनाकार:

वैसे देखा जाय तो 21 वी सदी के हिंदी काव्य में नारी विमर्श पर सैंकडों रचनाकारों ने अपनी कलम चलायी हैं । इसमें महिला रचनाकारों के साथ पुरुष रचनाकार भी शामिल हैं । ऐसा कहा जाता हैं कि नारी की वेदना नारी ही समझ सकती हैं, लेकिन यहाँ पुरुष भी नारी की वेदना या संवेदना व्यक्त करने के लिए अग्रेसर हैं । इसमें अनामिका, सुशीला टाकभौरे,

सुनीता जैन, निर्मला पुतुल, निर्मला ठाकुर, कात्यायनी, सविता सिंह आदि कवयित्री हैं तो चन्द्रकान्त देवताले, राजेश जोशी, मंगलेश डबराल, उदय प्रकाश, लीलाधर जगूड़ी, विष्णु खरे, अरूण कमल, लीलाधर मंडलोई, भगवत रावत आदि स्त्रीवादी कवि भी हैं । अतः इस शोध आलेख में उपर्युक्त कुछ गिने-चुने रचनाकारों की कुछ कविताओं के अंशों को लेकर हिंदी काव्य में नारी संवेदना को व्यक्त करने का प्रयास किया हैं ।

21 वी सदी के हिंदी काव्य में चित्रित नारी संवेदना:

जैसा कि ऊपर कहा जा चूका है कि 21 वी सदी के बहुत से कवि तथा कवयित्रियों ने अपने काव्य में नारी की व्यथा, पीड़ा, वेदना, दुःख और संवेदना व्यक्त करने का प्रयास किया हैं । नारी का विकास, प्रगति, उत्थान, अस्मिता के लिए उसकी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी आवश्यक है। समस्त मानव समाज में आधी जनसंख्या स्त्रियों की है। समाज के विकास के लिए जरूरी है कि पुरूष के तरह स्त्री भी प्रगति करे एवं स्त्री को सभी सुख–सुविधाएँ व सम्मान प्राप्त हो । विकास की मुख्यधारा में स्त्री शामिल हो तभी एक सुखमय समाज की कल्पना की जा सकती है । स्त्री और पुरूष के बीच प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक असमानताओं की गहरी खाई रही है । इन्हीं असमानताओं के चलते नारी में जो विद्रोह उत्पन्न हुआ हैं उसे 'स्त्री विमर्श' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है।

21 वी सदीं के काव्य में वर्तमान समाज के जीवन प्रसंगों, वर्तमान परिस्थितियों को प्रस्तुत किया किया गया है । वर्तमान जीवन में मनुष्य की विसंगतियों, स्त्री के शारीरिक–मानसिक शोषण, अतृप्त इच्छाओं, नारी पर पुरूषप्रधान वर्चस्व, पारिवारिक स्थिति, पति–पत्नी के बीच मनमुटाव, तनाव, टूटते रिश्तों की खनक आदि विषयों का चित्रण मिलता है ।

हिंदी साहित्य के लोकप्रिय कवि चंद्रकांत देवताले नारी वादी कवि के रूप में भी जाने जाते हैं । उनकी कुछ कविताओं में नारी के मन की संवेदना हमें दिखाई देती हैं । स्त्री अपनी ज़िन्दगी में दुःख की पीड़ा सहने के बावजूद भी वह हँसती है । जिस प्रकार परदे से रंगमंच बदलता रहता है, ठीक वैसे स्त्री भी अपनी ज़िन्दगी में परदे से दृश्यों को बदलती रहती है । 'औरत का हँसना' नामक कविता में कवि स्त्री का महावृत्तान्त बताते हुए कहते है -

"सचमुच औरतों का हँसना
कई बार परदे की तरह होता है
आमूनन प्रारंभ और अंत के बीच
मध्यांतर में गिर परदे की तरह ।"[1]

नारी का शोषण अपने ही परिवार में होता है । उसकी वेदनामय पीड़ा से इक्कीसवीं सदी की कविता हमें रूबरू कराती है । इस पुरूषप्रधान समाज में नारी स्वयं की इच्छा से कोई कार्य नहीं कर सकती । वह पूर्ण रूप से इस संसार में परावलंबी हैं । यहाँ तक कि अपने पति के साथ बाजार में जाते हुए यदि सड़क पार करनी हो तो भी वह पति से पूछकर करती है । सड़क पर पति की इजाजत लेकर शादी के तीस साल बाद भी डग भरना उसकी बोझीलता भारीपन और दर्द भरे सफर की दास्ताँ कहता है । नारी की इस परावलंबी संवेदना को लीलाधर जगूड़ी अपनी कविता में कहते है-

"अकेली औरत शादी के तीस वर्ष बाद भी
पूछती है सड़क पार कर लूँ

वह मर्द को अगुआ करती है
डग भरती है
जैसे जमाना पार कर रही हो
वह दिखती है एक खोए हुए साहस की तरह ।"[2]

हिंदी साहित्य में नारी की व्यथा और पीड़ा को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने का काम महिला रचनाकारों ने बड़ी लगन के साथ किया हैं । इनमें हिंदी की महिला रचनाकार अनामिका का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता हैं । कवयित्री नारी की विवशता व्यक्त करते हुए कहती है कि एक स्त्री के लिए न मायके में जगह होती हैं न ससुराल में । प्रचलित व्यवस्था ने उसे 'बेजगह' बना दिया है । इसका मतलब है कि उसके लिए अपना कोई घर ही नहीं है। ऐसी स्थिति में उसका विद्रोह प्रश्नों की चिनगारियाँ बनकर उभरकर आती है । अनामिका की 'बेजगह' कविता में उतारा गया प्रश्न स्त्री जीवन से सम्बन्धित असाधारण स्थिति को बताता है । स्त्री अपने स्वत्व की तलाश, प्रश्न करके ही करती है। इस प्रश्न में अपने अधिकारों से विस्थापित स्त्री जीवन के यथार्थ को अनुभूति की सच्चाई में यहाँ पकड़ा गया है। इसके लिए प्रश्न करने की ताकत कविता के द्वारा दर्शायी गयी है -

"जगह? जगह क्या होती है?
लड़कियाँ हवा, धूप, मिट्टी होती हैं
उनका कोई घर नहीं होता
जिनका कोई घर नहीं होता-
उनकी होती है भला कौन-सी जगह?"[3]

वर्तमान परिस्थिति में आधुनिक विचारों वाले साक्षर तथा जागृत समाज में भी प्राचीन कुप्रथाएँ प्रचलित है । बालविवाह, सतीप्रथा, दहेज, टोनही डायन आदि कुरीतियाँ समाज को शर्मसार करती आ रही है । ये अलग बात है कि इनके विरोध में कानून बने हैं परन्तु कानून से किसी व्यक्ति की सोच को नहीं बदला जा सकता । समाचार पत्रों में स्त्री अत्याचारों के न जाने कितने किस्सों के साथ भ्रूण हत्या जैसे गुनाह आए दिन हेडलाइन बन जाते हैं । इन सब अत्याचारों के लिए कौन जिम्मेदार है? क्या कोई समाज इसकी जिम्मेदारी लेगा? भ्रूणहत्या के दर्द को कवि उदय प्रकाश अपने 'औरतें' नामक कविता में व्यक्त करते हुए कहते है –

"हजारों लाखों छुपाती हैं गर्भ के अंधेरे में,
इस दुनिया में जन्म लेने से इंकार करती हुई ।
वहाँ भी खोज लेती हैं उन्हें भेदियाँ ध्वनि तरंगे,
वहाँ भी भ्रूण में उतरती है हत्यारी कटार ।"[4]

हिंदी की लोकप्रिय दलित और स्त्रीवादी कवयित्री सुशीला टाकभौरे अपने काव्य के माध्यम से अपनी बात बेबाकी से व्यक्त करती रहती हैं । पति और पत्नी संसाररूपी रथ के दो पहिये जैसे होते हैं, लेकिन पति अपने अहंकार के चलते पत्नी को आगे जाने नहीं देता । पत्नी को पति के साथ चलने का सांझा ज़रूर है । लेकिन पुरुष ऐसा एक मौका उसे नहीं देता है । वह उसे हमेशा पीछा करा देता है । ऐसी कष्टता एवं विवेचना सहने के बाद भी वह उम्मीद रखती है कि सवेरा ज़रूर हो ही जायेगा । अतः सुशीला टाकभौरे अपनी कविता 'यह और वह' में नारी के मन की बात इस प्रकार कहती हैं -

"साथ चलने का साँझा है
मगर फिर भी लड़ाई है
वह आगे बढ़ ही जाता है ।"[5]

विष्णु खरे की कविता 'हमारी पत्नियाँ' नारी के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करती है । नारी पर पुरूषों द्वारा होने वाले अत्याचार नारी के जीवन को नर्कमयी बना देते है । भारतीय नारी हमेशा से ही अपने परिवार के लिए चिंतित रहती है । वह पारिवारिक कार्यो में उलझी ही रहती है । किसी की पत्नी आटा

पीसने जाती है तो किसी की राशन के दुकान पर । अतः कवि विष्णु खरे पत्नियों के विभिन्न रूपों की चर्चा इसप्रकार करते है -

"और देखते है
अपनी पत्नियों के आटे की चक्की पर
या राशन की दुकान, बिजली के मिस्त्री या
डबलरोटी
वाले के सामने, अपने कई रूपों में
और पहचानते हुए भी हम उसमें एक अजनबी
औरत देखते हैं ।"[6]

हर एक स्त्री को लगता हैं कि उसकी इच्छा, मन और अभिलाषा को पुरुष समझे, लेकिन हर पुरुष स्त्री के मन को समझने की अपेक्षा उसके शरीर से उसकी पहचान करता हैं । स्त्री को अपनी देह एक खण्डहर के समान लगती है । क्योंकि इस समाज ने उसके ऐश्वर्य रूपी देह को भोग की वस्तु बना दी है । इसलिए स्त्री अपने शरीर के माध्यम से ही शरीर से ऊपर उठने की कोशिश करने लगती है । देह से ही देह की मुक्ति प्राप्त करने के लिए वे लड़ाई लड़ती है । अतः स्त्री की संघर्षमयी अभिलाषा को कवयित्री सविता सिंह अपनी 'एक स्त्री जानती है' कविता के माध्यम से इसप्रकार व्यक्त करती है -

"कौन जान सकता है लेकिन
जैसे एक स्त्री जानती है देह को
कौन जानता है बना सकती है वह इससे कैसी नाव
पार कर सकती है कौन सी सरिता
कि मुक्त कर सकती है वही
देह को देह से ।"[7]

भारतीय संस्कृति में नारी के लिए पति परमेश्वर होता हैं । पति जैसा करने को कहता हैं, पत्नी वैसा करती हैं । उसे एहसास है कि पति जो कुछ करवा रहा हैं, वह गलत हैं । लेकिन वह कुछ नहीं कहती । पति अपनी पत्नी से सेवा करवाता रहे और नारी मात्र, उसके कहे अनुसार चलती रहे । फिर भी उसे पति अपमानित, पीड़ित करता रहे, क्या ऐसा व्यवहार अपनी ही पत्नी के साथ शोभनीय है? क्या यह एक पति को शोभा देता है? लेकिन फिर भी भारतीय समाज में अभाव ग्रस्तता, बेबसी और शोषण प्रक्रिया से जूझँती हुई पत्नी दिन-रात पति और उसके परिवार की सेवा करती रही है । वह अपना जीवन परिवार के लिए समर्पित कर देती है ।

जीवन की अभाव ग्रस्तता, बेबसी और शोषण प्रक्रिया से इक्कसवीं सदी का कवि भली-भाँति परिचित है। पत्नी की मूक विवशता, सहनशीलता का लाभ पति उठाते रहता है । पति की ज्यादतियों का शिकार बनी पत्नी के दुःख को अरूण कमलजी अपनी कविता 'एक बार भी बोलती' में चित्रित करते हुए लिखते है -

"मैंने उसे जब भी जो कहा ।
किया उसने
जानते हुए भी बहुत बार कि यह गलत काम है ।
उसने वही किया जो मैंने कहा ।
अभी भी मैं समझ नहीं पाया ।
कि वह कभी बोली क्यों नहीं ।
मरते वक्त तक वह कुछ नहीं बोली ।
आँखे बस एक बार डोलीँ और ।"[8]

पुरुष प्रधान संस्कृति में पति द्वारा अपनी पत्नी को 'धरम पत्नी' का दर्जा देकर सदियों से पीड़ित एवं शोषित किया जा रहा है । समाज ने नारी के लिए तो असंख्य बंधनों का पिंजरा बना लिया है । शताब्दियों से नारी अकेली होकर यह सब पीड़ा झेल रही है । अतः नारी की इस पीड़ा को निर्मला ठाकुर अपनी 'अक्सर' नामक कविता में कहती हैं-

"और वह 'धरम पत्नी'
होंठों को कसकर भीच
झेल रही है पीड़ा का दंश
अकेली
शताब्दियों से।"[9]

स्त्री के प्रति गहरी संवेदनशीलता कवि भगवत रावत की कविता में हमें देखने मिलती है। उन्होंने अपने काव्य में स्त्री संवेदना को मार्मिकता व्यक्त किया है। स्त्री का दुःख, काम-काजी स्त्री का दर्द आदि उनकी कविताओं में विषय बनकर उभरे हैं। कवि की कविता में स्त्री अपनी परिस्थितियों से लड़ने की क्षमता रखनेवाली है। वह कमज़ोर नहीं बल्कि खुद पर विश्वास करके आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ती है। कवि भगवत रावत अपनी 'कचरा बीननेवाली लड़कियाँ' कविता में स्त्री का मार्मिकता के साथ वर्णन किया है। जैसे -

"किसी रजिस्टर में इनका नाम नहीं लिखा
ढूँढ़ने पर भी इनके बाप का पता नहीं मिलता
इनका कहीं कोई भाई नहीं दिखता
यहाँ तक कि खुद ही
अपनी माँ होती है
ये कचरा बीननेवाली लड़कियाँ।"[10]

स्त्री पूरे दिन घर में रहती है, फिर भी वह घर उसका कभी नहीं होता। वह हररोज़ अपने घर के सारे काम करने के बावजूद भी उस घर में कोई निर्णय लेने का अधिकार उसे नहीं होता। घर के दरवाजे पर जो नेम-प्लेट होती हैं उसपर उसका नहीं उसके पति का नाम होता हैं। इतना होते हुए भी वह स्त्री उस घर को अपना घर मानती हैं, क्योंकि स्त्री स्वयं एक घर है। उस घर में स्त्री कई रूपों में विराजती है, कभी जन्मदेनेवाली माँ के रूप में, प्रणयिनी के रूप में, पत्नी के रूप में, यानी स्त्री रूपी घर के बिना अन्य लोगों का कोई अस्तित्व नहीं है। स्त्री की इस सकारात्मक मानसिकता को कवयित्री निर्मला पुतुल 'अपने घर की तलाश' नामक कविता में कहती हैं -

"कहीं कोई घर नहीं होता मेरा
बल्कि मैं होती हूँ स्वयं एक घर
जहाँ रहते हैं लोग निर्लिप्त
गर्भ से लेकर बिस्तर तक के बीच
कई-कई रूपों में..."[11]

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि 21 वी सदी में दुनिया बदल गयी, परन्तु नारी की पीड़ा, वेदना, व्यथा और स्वतंत्रता में कोई बदलाव दिखाई नहीं देता। ऐसा माना जाता हैं कि शिक्षा पाने से नारी स्वतंत्र और आत्मनिर्भर हो गयी हैं। लेकिन उसकी स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता पुरुष प्रधान संस्कृति ने सीमित कर दी हैं। आज भी नए युग की नारी बंधनों में हैं। कभी-कभी ऐसा लगता हैं हमारी संस्कृति और समाज से चले आये संस्कार ही उसकी बंधनों का मूल कारण हैं। इसलिए नारी चाहे शिक्षित हो या अशिक्षित, वह अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए छटपटाती हुई दिखाई देती हैं। अतः इस आलेख में उल्लेखित काव्यपंक्तियों में उसकी गहरी संवेदना व्यक्त हुई हैं।

संदर्भ सूची:

1. उजाड़ में संग्रहालय (कविता संग्रह) – चंद्रकांत देवताले, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं. 2003, पृ.105
2. भय भी शक्ति देता है (काव्यसंग्रह) – लीलाधर जगूड़ी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 51
3. खुरदुरी हथेलियाँ (काव्य संग्रह) - अनामिका, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 2005, पृ.15-16

4. कवि ने कहा (काव्य संग्रह) – उदय प्रकाश, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 98
5. यह तुम भी जानो (काव्य संग्रह) - सुशीला टाकभौरे, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली, दूसरा सं. 2013, पृ. 71
6. कवि ने कहा (काव्यसंग्रह) –विष्णु खरे, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली,पृ.51
7. नींद थी और रात थी (कविता संग्रह) - सविता सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2005, पृ. 52
8. सबूत (काव्यसंग्रह) - अरूण कमल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.18-19
9. हँसती हुई लड़की (काव्य संग्रह) - निर्मला ठाकुर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2014, पृ. 69
10. वागर्थ, अंक 213, अप्रैल-2013, पृ. 62
11. नगाड़े की तरह बजते शब्द (काव्य संग्रह) - निर्मला पुतुल, भारतीय ज्ञानपीठ, दूसरा सं. 2005, पृ. 30